REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

शेखर जोशी की कहानियों में पहाड़ी जीवन का संघर्ष

डॉ. दुर्गावती सिंह
असि.प्रो. हिंदी, आर्य महिला पी. जी. कालेज,शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

प्रस्तावना :

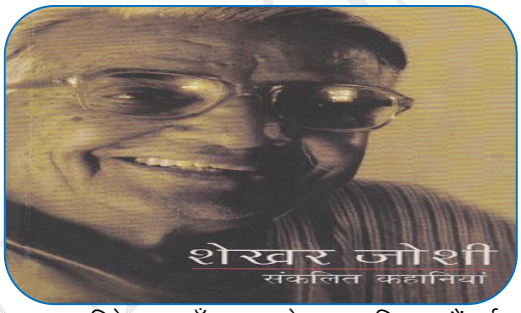

''कहानीकार किसी अन्य इलाके का व्यक्ति न होकर हमारे अपने बीच का ही होता है। उसके भी सपने टूटते हैं इसीलिए वह जो कुछ भोगता है। वह उसे पूर्ण ईमानदारी एवं पूरे सामर्थ्य के साथ सच्चाई के निकट जाकर अपनी कहानियों में उकेरता है।''[1] शेखरजोशी भी ऐसे कथाकार हैं, जो भोगे हुए जीवन का अपनी कहानियों का विषय बनाये हैं।

गोर्की, राहुल सांकृत्यायन, प्रेमचंद, यशपाल जैसे साहित्यकार की रचनाओं से प्रेरित होकर सामंती, रूढ़िवादी मान्यताओं से अपने आप को मुक्त पाया। वे स्वयं लिखते हैं,'' मेरा यह परिवेश जहाँ एक ओर प्राकृतिक सौंदर्य, गीत, संगीत और सांस्कृतिक गतिविधियों से समृद्ध था। वही मेरे चारों ओर निकट गरीबी, दैन्य और मानवीय शोषण का जाल कभी फैला हुआ था। परिवार की सामंती और रूढ़िवादी मान्यताओं से मुक्ति पाना मेरे लिए संभव न होता। अपनी अनेक कहानियों में मैंने इस विषमता को रेखांकित करने का प्रयत्न किया है।''[2]

जोशी जी हिंदी के उन दुर्लभ कथाकारों में है, जिन्होंने आजादी के भारतीय समाज खासतौर पर ग्रामीण पहाड़ी जन जीवन को अपनी कथाओं के माध्यम से उल्लेखित किया है। जोशी जीकी कहानियों में भारतीय समाज के विविध स्तरों का यथार्थ अपनी पूरी संश्लिष्टता के साथ चित्रित हुआ। सुदूर पहाड़ी इलकों के गाँवों, कस्बों, खेतों, खलिहानों, जंगलों, नदियों और उन इलाकों के इन्सानों, पशु–पक्षियों वहाँ की सामाजिक विषमताओं और मान्यताओं, अंधविश्वासों व रीति–रिवाजों इत्यादि के विश्वसनीय यथार्थ की बहुरंगी तस्वीर आपकी कहानियों में मिलती है। साथ ही साथ भारत के अन्य प्रांतों के महानगरीय यथार्थ और वहाँ के कल–कारखानों और कार्यालयों में काम करने वाले लोगों तक की जिंदगी की जीती–जागती छवि आपकी कहानियों में मौजूद है। इस तरह कहा जा सकता है कि जोशी हमारे देश और समाज के विशाल फलक के बहुस्तरीय और बहुआयामी यथार्थ के चितेरे हैं। इतनी व्यापकता किसी रचनाकार के लेखन में तभी आती है। जब वह शोषित, वंचित मानव की विश्व दृष्टि से देखता है। इसी तरह की रचना दृष्टि की बारीकी जोशी की सभी कहानियों दिखाई देती है। कारण है कि जोशी की कहानियों मेंकहीभी 'गढ़ा हुआ यथार्थ' नहीं है। गढ़े हुये यथार्थ मं अविश्वसनीयता का तत्त्व होता है, इसलिए उसमें किसी अर्थ की गहराई नहीं होती है। जबकि शेखर जोशी की कहानियों में निहित विश्वसनीयता यथार्थ ऐसे बहुआयामी अर्थ संकेत देते हैं जिनसे एक रचना–साहित्य का निर्माण होता है। डॉ. मदान ने आपकी कहानियों को ऐसी कहानियों की सूची मेंू स्थान दिया है जिनके आधर पर हिंदी कहानी के बदलते हुए स्वरूप को पहचाना जा सकता है। आपने अपनी कहानियों में पहाड़ी और ग्रामीण जीवन की विवशता, दर्द और संघर्ष को सहानुभूति के साथ व्यक्त किया है। आपके जीवन का बहुत बड़ा भाग कारखानों में

1
2

व्यतीत हुआ। इसीलिए आज मजूदरों के संघर्ष और पीड़ा का पारदर्शी चित्रण करने में अद्वितीय हैं। आपकी प्रगतिशीलता बौद्धिक उन्मेष न होकर यथार्थ की गहरी अनुभूति की रचनात्मक अभिव्यक्ति है।''[3]

कथाकार शेखरजोशी जी कहानियों में चित्रित पहाड़ी जीवन का अकेलापन निर्मल वर्मा के मध्यवर्गीय आधुनिकतावादी 'परिंदे' के अकेलेपन से भिन्न है, यहाँ ओढ़ा हुआ और कृत्रिम अकेलापन नहीं हैं, जैसाकि अज्ञेय की रचनाओं में दिखाई पड़ता है। पहाड़ी जीवन में जो पात्र अकेलपन जीने को अभिशप्त है उसके सामाजिक, आर्थिक कारण है। गरीबी में जी रहे परिवारों से पुरुष शहरों में आजीविका के लिए पलयानकर जाते हैं तथा बूढ़े माँ–बाप रह जाते हैं। पहाड़ी जीवन पर लिखी गुथी आपकी संपूर्ण कहानियों में ये विडंबनाये वहाँ के आर्थिक ढाँचे के साथ ही चित्रित हुई है न कि फशन के तौर पर। 'संवादहीन' कहानी की 'ताई' का सूचनापत्र इसी आर्थिक ढाँचे की बीच की कहानी है। जोशी जी लिखते हैं,''वह बेटे गाँव का मोह छोड़कर शहर के हो गये हैं, बेटियाँ अपने–अपने हाथ पीले कराकर अपने गृहस्थी में रम गयी है। पराया धन तो तो पराया ही होता है, किसके भरोसे कार–भार संभलता । धीरे–धीरे सब पराये हाथों चला गया। अपनी अकेली जान के लिए ताई दो जून का एक ही जून चूल्हा फूँक लेती। पर सूने घर की भाँय–भाँय जैसे काटने को दौड़ती थी।''[4] ताई के अकेलेपन को तोड़ने के लिए गनपत ने तोता लाकर दे दिया जो उनका वाचाल संगी–साथी बन गया, मगर कुंभ स्नान के लिए अब ताई गयी, तो अपना 'मिट्ठू' करे जगन मास्टर के पास छोड़ गयी। मास्टर जी की लापरवाही से तोता हमेशा के लिए जंगल में चला गया और कुंभ स्नान से लौटने पर ताई फिर अकेलेपन का शिकार हो गयी। ग्रामीण पहाड़ी जीवन से जुड़ी 'कोसी का घटवार' कहानी भी जोशी की उल्लेखनीय कहानी है। इसमें पहाड़ी भाषा, उनका ग्रामीण परिवेश, उनकी संवेदना, उनकी बोली इत्यादि का यथार्थ चित्रण दिखाई पड़ता है। इस कहानी में सीधा–साधा भारत का सभ्य समाज है। उनकी अलग दुनिया है जिसमें वह निश्छल प्रपंचहीन जीवन व्यतीत करता है। यह कहानी मुलतः भावबोध की यथार्थवादी कहानी है। इनके पात्र बुद्धि या अनुभव के धरातल पर संवेदना के गहरे बोध को आधार बनाते हैं और गहरी चोट खाकर भी गंभीर मनुष्य बने रहते हैं।''[5]

'कोसी का घटवार' कहानी का मुख्य पात्र गोसाई है जो कभ्जी फौज में नौकरी करता था। नारी पात्रों में प्रमुख पात्र लछमा है जो एक समय गोसाई से प्रेम करती थी। दोनों एक ही गाँव में रहते थे। फौज में होने तथा अनाथ होने के कारण गोसाई की लछमा से प्रेम होते हुए भी शादी नहीं होती है। लछमा का पिता कहता है,''जिसके आगे–पीछे भाई–बहिन, माँ–बाप नहीं, परदेश में बंदूक की नोक पर जान रखने वाले को छोकरी कैसे दे दे हम।''[6] यह कहानी पहाड़ी ग्रामीण परिवेश से ओत–प्रोत है। इस कहानी में जोशी जी ने ग्रामीण भाषा पर भी पूरा ध्यान दिया हैं; जैसे– ''जरूरी है जी! प्हले हमारा लंबर नहीं लगा दोगे।''[7]

ग्रामीण पहाड़ी इलाको को चितित्र करती हुई 'दाज्यू' कहानी हमारी संवेदना कोझकझोर देने वाली रचना है। 'दाज्यू' कहानी में तीन पात्र हैं– मदन, जगदीश बाबू और उनका दोस्त हेमंत। जगदीश बाबू पहली बार पहाड़ के ग्रामीण इलाकों में आया है और अकेला है। शहर की चहल–पहल शोरगुल में भी सूनेपन की अनुभूति है और वहाँ के लोग उन्हें बेगाने लगते हैं। जगदीा बाबू को अनायास ही अपना गाँव, साथ के लोग व गाँव की अन्य चीजे याद आने लगती हैं। जगदीश बाबू को कैफे में मदन के शब्द 'चाय शाब' सुनने को मिलते हैं तो उन्हें लगता है कि जैसे उनके मन की जो रिक्तता है, उसकी पूर्ति हो गयी है। परिचय के आदान–प्रदान से पता चलता है कि जगदीश बाबू मदन के निकटवर्ती गाँव के रहने वाले हैं। मदन को अपना अतीत याद आ जाता है। मदन को जगदीश बाबू के रूप में अतीत की कई छात्राएं अपने निकट जान पड़ती हैं। मदन जगदीश बाबू को 'दाज्यू' यानी बड़ा भाई माने लगता है और उसी तरह अपनत्व से परिपूर्ण व्यवहार करने लगता है। मदन 'दाज्यू' शब्द को इतनी आतुरता और लगन से दोहराता है जिसकी आतुरता से बहुत दिनों के बाद मिलने पर भी अपने बेटे को पुकारती और चूमती है। कुछ दिनों बाद जगदीश बाबू का एकाकीपन दूर हो जाता है और उन्हें शहर का सब कुछ अच्छा लगने लगता है। वह लिखते हैं,''अब उन्हेंमद का 'दाज्यू–दाज्यू'' कहना अच्छा

3

4

5

6

7

नहीं लगता। क्योंकि अब उनके संस्कार जाग उठे है। वह मदन को टोंक देते है– यह दाज्यू–दाज्यू क्या चिल्लाते रहते हो, दिन रात किसी की 'प्रेस्टिज का ख्याल भी नहीं है तुम्में। इस तरह अपनत्व की जो डोरी दोनों के बीच थी। वह जगदीश के इस व्यवहार के कारण टूट गयी, लेकिन मानसिक आघात से मदन टूटता नहीं, बल्कि वह और मजबूत हो जाता है। दूसरे दिन कैफे में जगदीश बाबू की भेंट अपने बचपन के सहपाठी हेमंत से होती है। हेमंत को लगता है मदन पहाड़ियों है। वह मदन का नाम जानना चाहता है। मदन जवाब नहीं देता। हेमंत पुनः आग्रह करता है तो मदन ने कहा,''बाय कहते है शाब।''[8] आवेश में उसका चेहरा लाल होकर और भी सुंदर हो गया। आकार में यह कहानी जितनी छोटी है उतनी ही गहरी और मारक है।

अनुभूति और अभिव्यक्ति के बीच में भाषा एक तीसरी सत्ता के रूप में स्वीकृत है। रचनाओं में भाषा मात्र संवाद का माध्यम भर नहीं होती, इससे कुछ ज्यादा होती है। वह रचना की प्रक्रिया के साथ–साथ लेखक की जीवन प्रक्रिया से भी जुड़ी होती है। आम लोगों की तरह लेखक भी भाषा से ही सीखता है। लेकिन अभिव्यक्ति स्तर पर वह भ्ज्ञाषा अपने ढंग से अर्जित करता है। भाषा के इस कलात्मक ढंग का प्रयोग हमें कथाकार जोशी जी के कहानियों में भरपूर देखने को मिलता है। ग्रामीण पहाड़ी परिवेश की दृष्टि से 'बदबू' कहानी उल्लेखनीय है। उदाहरण–''काहे शर्मिंदा करते हो भाई, अब तो कारखानों में बड़े–बड़े नेता पैदा हो गये हैं। हम किस खेत की मूली हैं।''[9]

स्पष्ट है कि शेखर जोशी जी पूरी खामोशी से सब कुछ कह देते हैं। प्रतीको और बिंबों के माध्यम से आप ऐसे वातावरण का सृजन करते है जिसमें पूरा वातावरण ही अंचल की अभिव्यक्ति बन जाता है। रचना वस्तु का संयत उपयोग और अभिव्यक्ति के माध्यमों का संतुलन कहानी को महत्त्वपूर्ण बना देती है। बिना किसी आवेग के कहानी धीमी गति से चलती हुई तृप्ति और संतोष पैदा करती है।

इस प्रकार हम सहज रूप से यह निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जोशी जी की ज्यादातर कहानियाँ हिमालय की ग्रामीण जिंदगी पर आधारित हैं। वह स्थान ऐसा है जहाँ पर रहना हर तरफ से कष्टमय है बावजूद इसके लोग वहाँ रहते हैं। क्यों रहते हैं ? यही सवाल जोशी जी बेचैन करता है। मैदानी इलाको के अपेक्षा पहाड़ी जिंदगी दुष्कर है। पहाड़ी जिंदगी का संघर्ष मैदानी इलाकों की अपेक्षा ज्यादा है। यही दृष्टिकोण कथाकार जोशी जी का है जिसके कारण आप विषम परिस्थितियों में जीवन को तरासते हैं। यही कला आपकी कहानियों को यथार्थ के धरातल पर आकर्षक एवं जीवंत बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संदर्भ :

1.डॉ.नीरज शर्मा, अंतिम दशक हिंदी कहानियाँ : संवदेना और शिल्प, पृ0 44
2.शेखर जोशी, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, मेरा लेखन, मेरा परिवेश, पृ0 25
3.डॉ.रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, पृ0 317
4.शेखर जोशी, शेखर जोशी संकलित कहानियाँ, संवादहीन, पृ0 28
5.कमलेश्वर, स्वातंत्र्योतर हिंदी कहानियाँ, भूमिका, पृ0 17
6.शेखर जोशी, शेखर जोशी संकलित कहानियाँ, कोसी का घटवार, पृ0 71
7.वही, पृ0 69
8.शेखर जोशी, मेरा पहाड़, दाज्यू, पृ0 12
9.शेखर जोशी, शेखर जोशी संकलित कहानियाँ, बदबू, पृ0 143

डॉ. दुर्गावती सिंह
असि.प्रो. हिंदी , आर्य महिला पी.जी. कालेज, शाहजहाँपुर (उ.प्र.).

8
9